## अष्टमः पाठः

# सङ्गीतानुरागी सुब्बण्णः

प्रस्तुत पाठ कन्नड़ भाषा के प्रख्यात साहित्यकार 'मास्ति वेङ्कटेश अय्यङ्गार विरचित' सुब्बण्ण शीर्षक उपन्यास के संस्कृत अनुवाद से संकलित किया गया है।

इसके अनुवादक हो. ना. वेङ्कटेश शर्मा हैं। इस उपन्यास का नायक सुब्बण्ण एक पौराणिक शास्त्री का पुत्र है। बचपन से ही उसकी संगीत में रुचि है। आगे चलकर वह महान् संगीतकार बनता है। प्रस्तुत अंश में उसके बचपन की एक घटना वर्णित है।

**सुब्बण्णस्य सङ्गीते यः सहजाभिलाषः आसीत्, स एकदा राजभवने संवृत्तया सङ्गत्या पुनरधिकं दृढीबभूव। एकस्मिन् दिने पुत्रेण साकं पुराणिकशास्त्री राजभवनमेत्य तत्रान्तःपुरस्त्रीजनसमक्षे पुराण-प्रवचनमारभमाण आदौ स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरमित्यादिश्लोकं गापयामास। तच्छ्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्। अथ किञ्चित्कालानन्तरं तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणमाकर्णयति स्म। पितुः पार्श्वे उपविष्टः सुब्बण्णः पुराणप्रवचनं कुतूहलेन शृण्वन्नेव मध्ये महाराजमभि सविस्मयं पश्यति स्म। महाराजस्य सुन्दरं मुखम्, मुखे बृहत्ति-लकालङ्कारः, तत्रापि विशालस्य गण्डस्थलस्य शोभावहं श्मश्रुकूर्चम् इत्यादि सर्वमपि तस्य विस्मयकारणमासीत्। राजापि तं बालकं द्वित्रिवारमभिवीक्ष्य चतुरोऽयं बाल इत्यमन्यत। एवमवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणमुद्दिश्य भोः, एष बालः भवत्कुमारः किम्? इत्यपृच्छत्। आम्, महाप्रभो, इति शास्त्री प्रत्युवाच। पुनः स्मयपूर्वकं राजा बालं सम्बोध्य अये वत्स, किं भवानपि पितृवत् पुराणप्रवचनं करिष्यति! इति पर्यपृच्छत्। तदा स बालः-अहं पुराणप्रवचनं न करोमि। सङ्गीतं गायामीति व्याहरत्। तदा राजा-आह, तथा ननु। तर्हि एकं गानं**

© NCERT not to be republished

**शृणुमस्तावत् इत्यवदत्। अनुपदमेव सुब्बण्णः श्रीराघवं दशरथात्मज-मित्यादिश्लोकं सङ्गीतमार्गेण अश्रावयत् तदन्ते पुनः सः कस्तूरी-तिलकमित्यादिश्लोकोऽपि मम कण्ठस्थोऽस्तीत्यगदत्।**

**महाराजस्य बहु सन्तोषोऽभवत्। एवं परितुष्टो राजा पारितोषिकत्वेन बालाय सताम्बूलमुत्तरीयवस्त्रं दत्वा, हे वत्स, त्वं मेधाव्यसि सुष्ठु सङ्गीतं शिक्षित्वा सम्यग्गातुं भवान् अभ्यस्यतु। इतोऽप्यधिकं पारितोषिकं भवते वयं दास्याम इति बालकमुक्त्वा पुनश्च शास्त्रिणमुद्दिश्य भोः शास्त्रिणः कुमारः चतुरोऽस्ति। शिक्षणं सम्यक् क्रियताम्। प्रायः महाकुशलो भविष्यतीत्यशंसत्। तदनन्तरं शास्त्री च पुत्रश्च स्वगृहाय संन्यवर्तेताम्।**

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **सङ्गीतानुरागी** | – | सङ्गीत + अनुरागी सङ्गीते अनुरागः यस्य सः (बहुव्रीहि स०) सङ्गीत में अनुराग रखने वाला। |
| **अनुरागी** | – | अनुराग + णिनि, प्रेमी। |
| **सहजाभिलाषः** | – | सहज + अभिलाषः, सहजः अभिलाषः (कर्मधारय स०) स्वाभाविकी इच्छा। |
| **संवृत्तया** | – | सं + वृत् + क्त + स्त्रीलिंग तृतीया ए० व०, होने वाली। |
| **सङ्गत्या** | – | सं + गम् + क्तिन् + स्त्री० लि० तृतीया एकवचन, सङ्गति से। |
| **पुनरधिकम्** | – | पुनर् + अधिकम् (संयोग), फिर अधिक। |
| **दृढीबभूव** | – | अदृढा दृढा बभूव दृढ + च्वि + भू लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन, प्रबल हो गयी। |
| **राजभवनमेत्य** | – | राजभवनम् + एत्य (सं.), राजभवन में आकर। |
| **एत्य** | – | आ+ इ + क्त्वा >ल्यप्; आकर। |
| **तत्रान्तःपुरस्त्रीजनसमक्षे** | – | तत्र + अन्तःपुरस्त्रीजनसमक्षे, अन्तःपुर की स्त्रियों के सामने। |
| **अन्तःपुरस्त्रीजनसमक्षे** | – | अन्तःपुरस्त्रीजनानां समक्षे षष्ठी तत्पु०, अन्तःपुर की स्त्रियों के सम्मुख। |

© NCERT not to be republished

**पुराणप्रवचनमारभमाण** – पुराणप्रवचनम् + आरभमाण (सं)

**पुराणप्रवचनम्** – पुराणस्य प्रवचनम् षष्ठी तत्पु०, पुराण की कथा।

**आरभमाणः** – आ + रभ् + शानच्, आरंभ करते हुए।

**गापयामास** – गै + णिच् + लिट् ल० प्रथम पुरुष एकवचन, गवाया।

**तच्छ्रुत्वा** – तत् + श्रुत्वा, यह सुनकर।

**तत्रत्याः** – तत्र + त्यप् प्रत्यय पुं० प्रथमा वि० बहु० व०, वहाँ उपस्थित।

**पर्यनन्दन्** – परि + नन्द् + लङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, प्रसन्न हुए।

**किञ्चित्कालानन्तरम्** – कश्चित् कालः इति किञ्चित्कालः कर्मधारय समास तस्य अनन्तरं षष्ठी तत्पुरुष, कुछ समय पश्चात्।

**समागतः** – सम् + आ + गम् + क्त पुं० प्र० वि०, ए० व०, आया हुआ।

**समुपविश्य** – सम् + उप + विश् + क्त्वा >ल्यप्, पास बैठकर।

**आकर्णयति स्म** – स्म के कारण लट्लकारार्थ भूतकाल, सुन रहा था।

**उपविष्टः** – उप + विश् + क्त पु० प्र० वि० ए० व०, बैठा हुआ।

**शृण्वन्नेव** – शृण्वन् + एव सुनते हुए ही।

**सविस्मयम्** – विस्मयेन सह अव्ययीभाव समास, आश्चर्य सहित।

**बृहत्तिलकालङ्कारः** – बृहत् तिलकम् इति बृहत्तिलकम् कर्मधारय समास बृहत्तिलकम् एव अलङ्कारः यस्य सः, विशाल तिलक धारण किये हुए।

**गण्डस्थलस्य** – कपोल या गाल का।

**शोभावहम्** – शोभाम् आवहति उप० तत्पु०, शोभा देने वाला।

**श्मश्रुकूर्चम्** – श्मश्रवः च कूर्चं च तेषां समाहारः समाहारद्वन्द्व, दाढ़ी और मूँछ।

**राजापि** – राजा + अपि, राजा भी।

**अभिवीक्ष्य** – अभि + वि + ईक्ष् + क्त्वा >ल्यप्, देखकर।

**चतुरोऽयम्** – चतुरः + अयम्, चतुर यह।

**इत्यमन्यत** – इति + अमन्यत, ऐसा माना।

**अवसिते** – अव + षो + क्त, सप्तमी वि० ए० व०, समाप्त होने पर।

**उद्दिश्य** – उत् + दिश् + क्त्वा >ल्यप्, लक्ष्य करके।

**भवत्कुमारः** – भवतः कुमारः षष्ठी तत्पु०; आपका पुत्र।

© NCERT not to be republished

| | | |
|---|---|---|
| **इत्यपृच्छत्** | – | इति + अपृच्छत्, ऐसा पूछा। |
| **प्रत्युवाच** | – | प्रति + उवाच, प्रति + ब्रू लिट् लकार प्र० पु०, ए० व०, कहा। |
| **स्मयपूर्वकम्** | – | स्मयः पूर्व यस्मिन् तत् बहु० स०, मुस्कुराते हुए। |
| **सम्बोध्य** | – | सम् + बुध् + णिच् + क्त्वा >ल्यप्, सम्बोधित करके। |
| **पर्यपृच्छत्** | – | परि + अपृच्छत्, पूछा। |
| **गायामीति** | – | गायामि + इति, गाता हूँ। |
| **व्याहरत्** | – | वि + आ + हृ + लङ् प्र० पु० ए० व०, कहा। |
| **प्रगीय** | – | प्र + गै + क्त्वा > ल्यप्, गाकर। |
| **तदन्ते** | – | तस्य अन्ते, ष० तत्पु०, उसके अन्त में। |
| **श्लोकोऽपि** | – | श्लोकः + अपि, श्लोक भी। |
| **कण्ठस्थः** | – | कण्ठे तिष्ठति, उपपद तत्पु, स्मरण। |
| **अगदत्** | – | गद् + लङ् ल० प्र० पु० ए० व०, बोला। |
| **सन्तोषोऽभवत्** | – | सन्तोषः + अभवत्, सन्तोष हुआ। |
| **परितुष्टः** | – | परि + तुष् + क्त; पुं प्र० वि०, ए० व०, सन्तुष्ट हुआ। |
| **सताम्बूलम्** | – | ताम्बूलेन सहितम्, बहुव्रीहि स०, (ताम्बूलेन सह वर्तमानम्), पान सहित। |
| **मेधाव्यसि** | – | मेधावी + असि, बुद्धिमान् हो। |
| **सम्यग्गातुम्** | – | सम्यक् + गातुम्, अच्छी तरह गाने के लिए। |
| **अभ्यस्यतु** | – | अभि + अस् (दिवादिगण) लोट् ल०, प्र०, पु०, ए० व०, अभ्यास करो। |
| **इतोऽप्यधिकम्** | – | इतः + अपि + अधिकम्, इससे भी अधिक। |
| **उक्त्वा** | – | वच् + क्त्वा, बोलकर। |
| **पुनश्च** | – | पुनः + च, और फिर। |
| **क्रियताम्** | – | कृ + कर्म० लोट् लकार प्र० पु०, ए० व०। |
| **भविष्यतीत्यशंसत्** | – | भविष्यति + इति + अशंसत्, होगा ऐसा कहा। |
| **अशंसत्** | – | शंस् + लङ् प्र० पु० ए० व०, कहा। |
| **तदनन्तरम्** | – | तस्मात् अनन्तरम् पञ्चमी तत्पु०, इसके बाद। |
| **संन्यवर्तेताम्** | – | सम् + नि + वृत् : लङ् प्र० पु० द्वि० व०, लौट गए। |

© NCERT not to be republished

## अभ्यासः

**1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्**

(क) सुब्बण्णस्य सहजाभिलाषः कस्मिन् आसीत्?
(ख) पुराणिकशास्त्री केन सह राजभवनम् अगच्छत्?
(ग) पुराणिकशास्त्री स्वपुत्रेण किं गापयामास?
(घ) पुराणप्रवचनं शृण्वन् सुब्बण्णः महाराजं कथं पश्यति स्म?
(ङ) महाराजस्य विस्मयकारणं किम् आसीत्?
(च) राजा बालं कति वारम् अपश्यत्?
(छ) राजा बालं किम् अपृच्छत्?
(ज) स बालः राजानं किं व्याहरत्?
(झ) परितुष्टः राजा बालाय किम् अयच्छत्?
(ञ) राज्ञः कथनानन्तरं शास्त्री तत्पुत्रः च कुत्र अगच्छताम्?

**2. रेखाङ्कितानि पदानि आश्रित्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत**

(क) सुब्बण्णस्य सङ्गीतेऽभिलाषः राजभवने संवृत्तया सङ्गत्या दृढीबभूव।
(ख) तच्छ्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्।
(ग) समागतो राजा पुराणम् आकर्णयति स्म।
(घ) सुब्बण्णस्य पितुः पार्श्वे महाराजं सविस्मयं पश्यति स्म।
(ङ) महाराजस्य मुखे तिलकालङ्कारः आसीत्।
(च) राजा बालाय सताम्बूलम् उत्तरीयवस्त्रम् अयच्छत्।

**3. विशेष्यैः सह विशेषणानि संयोज्य मेलयत**

| **विशेषण** | **विशेष्य** |
|---|---|
| संवृत्तया | श्मश्रुकूर्चम् |
| समागतः | श्लोकः |
| सविस्मयम् | मुखम् |
| सुन्दरम् | गण्डस्थलस्य |
| विशालस्य | सङ्गत्या |
| कण्ठस्थः | महाराजम् |
| शोभावहम् | राजा। |

**4. आशयं स्पष्टीकुरुत**

(क) अहं पुराणप्रवचनं न करोमि। सङ्गीतं गायामि।
(ख) त्वं मेधावी असि सुष्ठु सङ्गीतं शिक्षित्वा सम्यक् गातुं भवान् अभ्यस्यतु।

© NCERT not to be republished

**5. कोष्ठकशब्दैः सह विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत**

(क) ........................... दिने पुराणिकशास्त्री राजभवनम् अगच्छत् (एक)

(ख) ............... पार्श्वे उपविष्टः सुब्बण्णः महाराजं सविस्मयं पश्यति स्म। (पितृ)

(ग) राजा ........................... सम्बोध्य पर्यपृच्छत्। (बाल)

(घ) त्वं ........................... असि। (मेधाविन्)

(ङ) पारितोषिकं ........................... वयं दास्यामः (भवत्)

**6. अर्थं लिखित्वा संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत**

साकम्, पार्श्वे, पत्र, सुष्ठु, सम्यक्, पुनः।

**7. पाठात् विलोमपदानि चित्वा लिखत**

आगत्य, अत्रत्याः, परागतः, दूरे, उदतरत्, प्रारब्धे, कदा, मूर्खः, असन्तोषः, अल्पम्।

## योग्यताविस्तारः

1. **कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।**
**नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्॥**
**सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।**
**गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥**

अस्मिन् पाठे उल्लिखितस्य अस्य श्लोकस्य सस्वरं गायनस्य अभ्यासः करणीयः।

2. **अस्मिन् पाठे राज्ञः चरित्रे तेन कृते सुब्बण्णस्य सत्कारे किं वैशिष्ट्यम् इति अन्विच्छत।**

© NCERT not to be republished